ॐ

छक्खंडागमो

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइय-धवला-टीका-समण्णिदो

तस्स पंचमें खंडे वग्गणाए

फासाणुओगद्दारं

****

सयलोवसग्गणिवहा संवरणेणेव* जस्स फिट्टंति।

पासस्स तस्स णमिउं फासणुयोअं परूवेमो।।

फासे त्ति।।१।।

जं तं फासे त्ति अणुयोगद्दारं पुव्वमादिट्ठं तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो त्ति पुव्वुद्दिट्ठअहियारसंभालणमेदेण सुत्तेण कदं।

(* अ-आ प्रत्योः 'संभरणेणेव' इति पाठः।)

जिसकी आराधना करनेसे ही सब प्रकारके उपसर्गोके समुदाय नष्ट हो जाते हैं उस पार्श्व जिनेंद्रको नमस्कार करके मैं स्पर्श अनुयोगद्वारका निरूपण करता हूँ।

अब स्पर्शनानुयोग का प्रकरण है।।१।।

जो पहले स्पर्श अनुयोगद्वारका निर्देश कर आये हैं उसका अर्थ कहते हैं। इस प्रकार इस सूत्रद्वारा पहले कहे गये अधिकारकी सम्हाल की गयी है।

विशेषार्थ -- पहले सत्प्ररूपणाकी उत्थानिकामें जो कृति, वेदना आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश कर आये हैं, उनमेंसे प्रारंभके दो अनुयोगद्वारोंका विवेचन हो चुका है। स्पर्श यह तीसरा अनुयोगद्वार क्रमप्राप्त है। इसी बातका ज्ञान करानेके लिए 'फासे त्ति' यह सूत्र आया है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

तत्थ इमाणि सोलस अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति -- फासणिक्खेवे फासणयविभासणदाए फासणामविहाणे फासदव्वविहाणे फासखेत्तविहाणे फासकालविहाणे फासभावविहाणे फासपच्चयविहाणे फाससामित्तविहाणे फासफासविहाणे फासगइविहाणे फासअणंतरविहाणे फाससण्णियासविहाणे फासपरिमाणविहाणे फासभागाभागविहाणे फासअप्पाबहुए त्ति।।२।।

एवमेदे फासाणुयोगद्दारस्स सोलस अत्थाहियारा। किमट्ठमेदे सोलस अत्थाहियारा एत्थ पडिवज्जंति? ण, एदेहि विणा फासाणुयोगद्दारस्स अवगमोवायभावादो। तम्हा (*प्रतिषु 'तं जहा' इति पाठः।) सोलसेहि अणुयोगद्दारेहि फासपरूवणा कायव्वा त्ति सिद्धं।

जहा उद्देसो तहा णिद्देसो त्ति णायादो पढमं फासणिक्खेवपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

फासणिक्खेवे त्ति।।३।।

पुव्वं जमादिट्ठो (* अ-आ प्रत्योः 'प्ररूविदो' इति पाठः।) फासणिक्खेवो तस्स परूवणं कस्सामो। किमट्ठं फासणिक्खेवो आगदो? एसो फाससद्दो तेरसेसु अत्थेसु वट्टदे। तत्थ केण अत्थेण पयदं केण वा ण

उसमें ये सोलह अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं -- स्पर्शनिक्षेप, स्पर्शनयविभाषणता, स्पर्शनामविधान, स्पर्शद्रव्यविधान, स्पर्शक्षेत्रविधान, स्पर्शकालविधान, स्पर्शभावविधान, स्पर्शप्रत्यविधान, स्पर्शस्वामित्वविधान, स्पर्शगतिविधान, स्पर्शअनन्तरविधान, स्पर्शसन्निकर्षविधान, स्पर्शपरिमाणविधान और स्पर्शअल्पबहुत्व।।२।।

इस प्रकार स्पर्श अनुयोगद्वारके ये सोलह अर्थाधिकार होते हैं।

शंका -- यहाँ ये सोलह अर्थाधिकार क्यों कहे गये हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि इनके बिना स्पर्श अनुयोगद्वारके ज्ञान करानेका अन्य कोई उपाय नहीं है। इसलिए इन सोलह अनुयोगोंके द्वारा स्पर्शका कथन करना चाहिए, यह बात सिद्ध होती है।

अब 'उद्देश्यके अनुसार निर्देश किया जाता है' इस न्यायके अनुसार पहले स्पर्शनिक्षेप अधिकारका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

अब स्पर्शनिक्षेपका अधिकार है।।३।।

पहले जिस स्पर्शनिक्षेपका निर्देश कर आये हैं उसका यहाँ कथन करते हैं।

शंका -- स्पर्शनिक्षेप अधिकार किसलिए आया है?

समाधान -- यह स्पर्श शब्द तेरह अर्थोंमें विद्यमान है। उनमेंसे प्रकृतके किस अर्थसे प्रयोजन है और किस अर्थसे प्रयोजन नहीं है, अथवा वे तेरह अर्थ कौन हैं, ऐसा प्रश्न करनेपर स्पर्श

पयदं के वा ते तेरस अत्था त्ति पुच्छिदे तेरसण्णं फासद्दत्थाणं (* अ प्रतौ 'फासं सव्वं दव्वाणं', ता प्रतौ 'फाससद्दद्धा(त्था)णं' इति पाठः।) परूवणं काऊण अपयदत्थे णिराकरिय पयदत्थपरूवणट्ठमागदो।

तेरसविहे फासणिक्खेवे (* ता प्रतौ 'तेरसविहो फासणिक्खेवे' इति पाठः।) -- णामफासे ठवणफासे दव्वफासे एयखेत्तफासे अणंतरखेत्तफासे देसफासे तयफासे सव्वफासे फासफासे कम्मफासे बंधफासे भवियफासे भावफासे चेदि।।४।।

एवं फाससद्दो तेरसेसु अत्थेसु वट्टदे। ण च तेरसेसु चेव अत्थेसु फाससद्दो वट्टदि त्ति अवहारणमत्थि, किंतु फाससद्दयाणं दिसादरिसणमेदेण कयं।

फासणयविभासणदाए।।५।।

फासस्स णयविभासणदा फासणयविभासणदा, तीए फासणयविभासणदाए अहियारो (*अ-ता प्रत्योः 'अहियादो (रो)' इति पाठः।) त्ति भणिदं होदि। तेरसणिक्खेवे भणिदूण तेसिमट्ठमभणिय किमट्ठं फासणयविभासा कीरदे? ण एस दोसो; णयविभासणदाए विणा णिक्खेवत्थपरूवणाणुववत्तीदो। निश्चये क्षिपतीति निक्षेपो नाम। ण च णयविभासणदाए विणा संसयाणज्झवसायविवज्जासट्ठियजीवे तत्तो ओहट्टिदूण (* प्रतिषु 'आयट्टिदूण' इति पाठः।) णिक्खेवो णिच्छयम्मि ट्ठविदुं समत्थो, अणुवलंभादो।

शब्दके तेरह अर्थोंका कथन करके, उनमेंसे अप्रकृत अर्थोंका निराकरण करके प्रकृत अर्थका प्ररूपण करनेके लिए यह स्पर्शनिक्षेप अधिकार आया है।

स्पर्शनिक्षेप तेरह प्रकारका है -- नामस्पर्श, स्थापनास्पर्श, द्रव्यस्पर्श, एकक्षेत्रस्पर्श, अनन्तरक्षेत्रस्पर्श, देशस्पर्श, त्वक्स्पर्श, सर्वस्पर्श, कर्मस्पर्श, बन्धस्पर्श, भव्यस्पर्श और भावस्पर्श।।४।।

इस प्रकार स्पर्श शब्द तेरह अर्थोंमें उपलब्ध होता है। स्पर्श शब्द इन तेरह अर्थोंमें ही पाया जाता है, ऐसा कोई निश्चय नहीं है; किन्तु इस सूत्र द्वारा स्पर्श शब्दके अर्थोंका मात्र दिशाज्ञान कराया गया है।

स्पर्शनयविभाषणताका अधिकार है।।५।।

स्पर्शका नयद्वारा विशेष व्याख्यान करना स्पर्शनयविभाषणता कहलाता है। उसका यहाँ अधिकार है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

शंका -- तेरह प्रकारके निक्षेपोंका निर्देश तो किया, पर उनका अर्थ न कहकर पहले स्पर्शोंका नयद्वारा विशेष व्याख्यान क्यों किया जा रहा है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि नयद्वारा विशेष व्याख्यान किये बिना निक्षेपार्थका कथन करना सम्भव नहीं है। निक्षेप शब्दका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है -- 'निश्चये क्षिपतीति निक्षेपः' अर्थात् जो किसी एक निश्चयपर पहुँचाता है उसे निक्षेप कहते हैं। परंतु निक्षेप नयविभाषणता अधिकारका कथन किये बिना संशय, अनध्यवसाय और विपर्यय ज्ञानमें स्थित जीवोंको वहाँसे हटाकर किसी एक निश्चयमें स्थापित करनेमें समर्थ नहीं है, क्योंकि

तम्हा पुव्वं ताव णयविभासणदो कीरदे। उक्तं च --

प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते।

युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत्।।१।। *

(* ति. प. १, ८२, वि. भा. २७६४)

को णओ के फासे इच्छदि?।।६।।

के वा णेच्छदि त्ति एत्थ पुच्छा किण्ण कदा? ण, एदे इच्छदि त्ति अवगदे सेसे ण इच्छदि त्ति उवदेसेण विणा अवगमादो।

सव्वे एदे फासा बोद्धव्वा होंति णेगमणयस्स।

णेच्छदि य बंध-भवियं ववहारो संगहणओ य।।७।।

एदस्स गाहासुत्तस्स अत्थो उच्चदे। तं जहा -- णेगमणयस्स असंगहियस्स एदे तेरस वि फासा होंति त्ति बोद्धव्वा, परिग्गहिदसव्वणयविसयत्तादो। ववहारणओ संगहणओ च बंध-भवियफासे णेच्छंति। एदेहि णएहि किमट्ठं बंधफासो अवणिदो? ण एस दोसो, कम्मफासे तस्स अंतब्भावादो। तं जहा -- कम्मफासो दुविहो कम्मफासो णोकम्मफासो चेदि। तेसु दोसु वि बंधफासो पददि; तेहिंतो वदिरित्तबंधाभावादो। अधवा बंधफासो

ऐसा देखा नहीं जाता इसलिए पहले नयविभाषणता अधिकारका कथन करते हैं। कहा भी है -

शब्दके तेरह अर्थोंका कथन करके, उनमेंसे अप्रकृत अर्थोंका निराकरण करके प्रकृत अर्थका प्ररूपण करनेके लिए यह स्पर्शनिक्षेप अधिकार आया है।

जिस पदार्थका प्रत्यक्षादि प्रमाणोंके द्वारा, नैगमादि नयोंके द्वार और नामादि निक्षेपोंके द्वारा सूक्ष्म दृष्टिसे विचार नहीं किया जाता है, वह पदार्थ युक्त (संगत) होते हुए भी अयुक्तसा (असंगतसा) प्रतीत होता है और अयुक्त होते हुए भी युक्तसा प्रतीत होता है।।

कौन नय किन स्पर्शोंको स्वीकार करता है?।।६।।

शंका -- यहाँ 'और किन स्पर्शोंको नहीं स्वीकार करता है' ऐसी पृच्छा क्यों नहीं की?

समाधान -- नहीं, क्योंकि इन स्पर्शोंको स्वीकार करता है, ऐसा ज्ञान हो जानेपर शेषको नहीं स्वीकार करता, यह उपदेशके विना ही जाना जाता है।

नैगमनयके ये सब स्पर्श विषय होते हैं, ऐसा जानना चाहिए। किन्तु व्यवहार नय और संग्रह नय बन्धस्पर्श और भव्यस्पर्शको स्वीकार नहीं करते।।७।।

इस गाथासूत्रका अर्थ कहते हैं। यथा -- असंग्रहिक नैगमनयके ये तेरह ही स्पर्श विषय होते हैं, ऐसा यहाँ जानना चाहिए, क्योंकि यह नय सब नयोंके विषयोंको स्वीकार करता है। व्यवहारनय और संग्रहनय बन्धस्पर्श और भव्यस्पर्शको नहीं स्वीकार करते।

शंका -- बन्धस्पर्श इन दोनों नयोंका विषय क्यों नहीं है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि इन दोनों नयोंकी दृष्टिमें उसका कर्मस्पर्शमें अन्तर्भाव हो जाता है। यथा -- कर्मस्पर्श दो प्रकारका है -- कर्मस्पर्श और नोकर्मस्पर्श। बन्धस्पर्शका उन दोनोंमें ही अन्तर्भाव होता है, क्योंकि इन दोनोंके सिवाय बन्ध नहीं पाया जाता। अथवा बन्धस्पर्श है ही नहीं, क्योंकि, बन्ध और स्पर्श इन दोनों शब्दोंमें अर्थभेद नहीं

णत्थि चेव; बंध-फाससद्दाणमत्थभेदाभावादो। बंधेण विणा वि लोहग्गीणं फासो दीसदि त्ति भणिदे -- ण, संजोग-समवायलक्खणसंबंधेहि विणा फासाणुवलंभादो।

भवियफासो किमट्ठमवणिदो (* अ प्रतौ 'अभणिदो' इति परिवर्तितः पाठः।)? विस-जंत-कूड-पंजरादीणमिच्छिददव्वेहि संपहि फासो णत्थि त्ति अवणिदो (* अ प्रतौ 'अभणिदो' इति परिवर्तितः पाठः।)। ण च दोण्णं (* अ प्रतौ 'च दोण्णं', ता प्रतौ 'च (ण) दोण्णं' इति पाठः।) फासेण विणा फाससण्णा जुज्जदे, विरोहादो। अपुट्ठकाले फासो णत्थि, पुट्ठकाले कम्म-णोकम्म-सव्व-देसफासेसु पविसदि त्ति भवियफासो अवणिदो त्ति दट्ठव्वो। भवियफासो ठवणफासे पविसदि त्ति संगहणओ अवणेदि, सो एसो त्ति अज्झारोवेण विणा संपहि जंतादिसु फासाणुववत्तीदो।

पाया जाता। यदि कहा जाय कि बंधके बिना भी लोह और अग्निका स्पर्श देखा जाता है, इसलिए बन्धसे स्पर्श भिन्न है, सो ऐसा कहना ठीक नहीं है; क्योंकि संयोग सम्बन्ध और समवाय सम्बन्ध के विना स्पर्श स्वतन्त्र रूपसे नहीं पाया जाता।

विशेषार्थ -- यहाँ यह प्रश्न है कि बन्धस्पर्श संग्रहनय और व्यवहारनयका विषय क्यों नहीं है । इस प्रश्नका दो प्रकारसे समाधान किया है। प्रथम तो यह बतलाया है कि बन्धस्पर्शका कर्मस्पर्शमें अन्तर्भाव हो जाता है। कर्मस्पर्शके कर्म और नोकर्म ये दो भेद हैं। लोकमें और आगममें बन्ध शब्द द्वारा इन्हींका ग्रहण होता है, इसलिए बन्धस्पर्शका कर्मस्पर्शमें अन्तर्भाव किया गया है। पर बन्ध शब्दका जो अर्थ है वही अर्थ स्पर्श शब्दसे भी ध्वनित होता है, यह देखकर दूसरा उत्तर यह दिया गया है कि बन्धस्पर्श स्वतन्त्र वस्तु ही नहीं है, इसलिए उसे व्यवहारनय और संग्रहनयका विषय नहीं माना गया है।

शंका -- भव्यस्पर्शको उक्त दोनों नयोंका विषय क्यों नहीं कहा है?

समाधान -- एक तो विष, यन्त्र, कूट और पिंजरा आदिका विवक्षित द्रव्योंके साथ वर्तमानमें स्पर्श नहीं उपलब्ध होता, इसलिए भव्यस्पर्शको उक्त दोनों नयोंका विषय नहीं कहा है। यदि कहा जाय कि दो का स्पर्श हुए बिना भी स्पर्श संज्ञा बन जायेगी, सो भी बात नहीं है; क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है। दूसरे, अस्पृष्ट कालमें स्पर्श नहीं है और स्पृष्ट कालमें उसका कर्मस्पर्श, नोकर्मस्पर्श, सर्वस्पर्श और देशस्पर्शमें अन्तर्भाव हो जाता है, इसलिए भी भव्यस्पर्शको व्यवहारनय और संग्रहनयका विषय नहीं माना, ऐसा यहाँ जानना चाहिए। तथा भव्यस्पर्श स्थापनास्पर्शमें अन्तर्भूत हो जाता है, इसलिए संग्रहनय उसे स्वीकार नहीं करता; क्योंकि 'वह यह है' ऐसा अध्यारोप किये बिना वर्तमानकालमें यन्त्रादिकमें स्पर्श-व्यवहार नहीं बन सकता।

विशेषार्थ -- भव्यस्पर्शका स्वरूप आगे बतलानेवाले हैं। उससे स्पष्ट है कि भव्यस्पर्शमें वर्तमानकालीन स्पर्श विवक्षित न होकर स्पर्शकी योग्यता ली गयी है, और व्यवहारनय तथा संग्रहनय ऐसे स्पर्शको स्वतन्त्ररूपसे ग्रहण नहीं करते; इसलिए यहाँ भव्यस्पर्श व्यवहारनय और संग्रहनयका विषय नहीं है, यह कहा है।

एयक्खेत्तमणंतरबंधं भवियं च णेच्छदुज्जुसुद्धो।

णामं च फासफासं भावप्फासं च सद्दणओ।।८।।

एदस्स गाहासुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- क्षियन्ति (* प्रतिषु 'क्षीयन्ति' इति पाठः।) निवसन्ति (* ता प्रतौ 'सन्त्यस्मिन्' इति पाठः।) यस्मिन् पुद्गलादयस्तत् क्षेत्रमाकाशम्। एकं च तत्क्षेत्रं च एकक्षेत्रमिति व्युत्पत्तिमाश्रित्य जदि एगो आगासपदेसो घेप्पदि तो एगक्खेत्तफासो णत्थि। कुदो? अण्णेसिमण्णत्थ अप्पाणं मोत्तूण णिवासाभावादो, सव्वेसिं पयत्थाणं सरूवे चेव णिविट्ठाणमुवलंभादो च। जो जस्स अप्पोवलद्धीए कारणं सो तस्स आहारो। इयरो वि तत्थ वसदि ति भणिदे (* अ का प्रत्योः 'भण्णदे' इति पाठः।), ण च आगासादो सेसदव्वाणं सरूवोवलद्धी; णिप्फण्णाणं (ता प्रतौ 'णिप्फण्णाणं' इति पाठः) तत्थावट्ठाणदंसणादो। तदो आगासस्स खेत्तत्ताभावादो एगक्खेत्तफासो णत्थि। अथ खियंति (* प्रतिषु 'खीयंति' इति पाठः।) णिवसंति जम्हि तं खेत्तमिदि जदि सगरूवं चेव घेप्पदि तो वि एगक्खेत्तफासो णत्थि, एगक्खेत्ते एगसरूवे दुभावाभावादो। ण च एगम्हि फासो अत्थि; तस्स दुप्पहुडीसु चेव उवलंभादो।

ऋजुसूत्र एकक्षेत्रस्पर्श, अनन्तरस्पर्श, बन्धस्पर्श और भव्यस्पर्शको स्वीकार नहीं करता। किन्तु शब्दनय नामस्पर्श, स्पर्शस्पर्श और भावस्पर्शको ही स्वीकार करता है।।८।।

अब इस गाथासूत्रका अर्थ कहते हैं। यथा -- 'क्षि' धातुका अर्थ 'निवास करना' है। इसलिए क्षेत्र शब्दका यह अर्थ है कि जिसमें पुद्गल आदि द्रव्य निवास करते हैं उसे क्षेत्र अर्थात् आकाश कहते हैं। एक जो क्षेत्र वह एकक्षेत्र कहलाता है। इस प्रकार इस व्युत्पत्तिका आलम्बन लेकर यदि एक आकाशप्रदेश ग्रहण किया जाता है, तो एक क्षेत्रस्पर्श नहीं बनता; क्योंकि, अन्य द्रव्योंका अपने सिवाय अन्य द्रव्योंमें निवास नहीं पाया जाता, और सभी पदार्थ अपने स्वरूपमें निविष्ट ही उपलब्ध होते हैं। ऐसा नियम है कि जो जिसकी स्वरूपोपलब्धिका कारण होता है वही उसका आधार माना जा सकता है।

यदि कहा जाय कि इतर पदार्थ भी उसमें निवास करता है तो इसपर हमारा कहना यह है कि आकाश द्रव्यसे शेष द्रव्योंकी स्वरूपोपलब्धि तो होती नहीं, क्योंकि निष्पन्न पदार्थोंका ही आकाशमें अवस्थान देखा जाता है, इसलिए आकाशको क्षेत्रपना नहीं प्राप्त होनेसे एक क्षेत्रस्पर्श नहीं बनता।

जिसमें 'खियंति णिवसंति' अर्थात् निवास करते हैं वह क्षेत्र है, इस व्युत्पत्तिके अनुसार यदि वस्तुका अपना स्वरूप ही ग्रहण किया जाता है, तो भी एकक्षेत्रस्पर्श नहीं बनता, क्योंकि, ऐसा माननेपर एकक्षेत्रका अर्थ होता है एक स्वरूप, और ऐसी अवस्थामें उसमें द्वित्व नहीं बन सकता। यदि कहा जायकि एकमें भी स्पर्शकी उपलब्धि हो जायेगी, सो भी बात नहीं है, क्योंकि उसकी दो आदि द्रव्योंके रहनेपर ही उपलब्धि होती है।

एवमणंतरखेत्तफासो वि णत्थि। कुदो? खेत्ताभावादो। जदि आगासस्स खेत्तत्तं सिद्धं तो सांतरखेत्त-अणंतरखेत्ताणं पि संभवो होज्ज। ण च वुत्तणाएण आगासस्स खेत्तत्तमत्थि। तदो अणंतरखेत्ताभावादो अणंतरखेत्ताभावादो अणंतरखेत्तफासो वि णत्थि त्ति घेत्तव्वो। खेत्तसद्दे सरूवे वट्टमाणे संते वि णाणंतरखेत्तमत्थि; एदमेदस्स अणंतरमिदि वयणपवुत्तीए णिबंधणाभावादो। ण च अच्चंतपुधभूदाणमत्थाणमणंतरमत्थि, विरोहादो। बंधफासो वि णत्थि। कुदो? बंधो णाम दुभावपरिहारेण एयत्तावत्ती। ण च तत्थ फासो अत्थि; एयत्ते तव्विरोहादो। ण च सव्वफासेण

वियहिचारो, तत्थ एगत्तावत्तीए विणा सव्वावयवेहि फासब्भुवगमादो (* अ प्रतौ 'पारब्भुवगमादो', ता प्रतौ 'पारंभुवगमादो' इति पाठः।)। तहा भवियफासो वि णत्थि; अणुप्पण्णफासपज्जायस्स वट्टमाणकाले अत्थित्तविरोहादो, उप्पण्णस्स विसेसफासेसु अंतब्भावदंसणादो, वट्टमाणकालं मोत्तूण सेसकालाभावादो च। तहा ट्ठवणफासो वि णत्थि; सोयमिदि संकप्पवसेण अण्णस्स अण्णसरूवावत्तीए अभावादो, वट्टमाणकालेण सह ट्ठवणाए विरोहादो च।

इसी प्रकार अनन्तरक्षेत्र भी नहीं बनता, क्योंकि, क्षेत्र नामकी कोई वस्तु ही नहीं ठहरती। यदि आकाश द्रव्यका क्षेत्रपना सिद्ध हो, तो सान्तरक्षेत्र और अनन्तरक्षेत्र सिद्ध हो सकते हैं। परन्तु पूर्वोक्त न्यायसे आकाशके क्षेत्रपना सिद्ध नहीं होता, इसलिए अनन्तर क्षेत्रकी सिद्धि न होनेसे अनन्तरक्षेत्र स्पर्श भी नहीं बनता, ऐसा यहाँ स्वीकार करना चाहिए।

यदि स्वरूपार्थमें विद्यमान क्षेत्र शब्द लिया जाता है तो भी अनन्तरक्षेत्र नहीं बनता, क्योंकि, यह इसके अनन्तर है इस वचनप्रवृत्तिका कोई कारण नहीं पाया जाता। यदि कहा जाय कि अत्यन्त पृथग्भूत पदार्थोंका अन्तर नहीं पाया जाता, सो भी बात नहीं है, क्योंकि ऐसा माननेमें विरोध आता है।

बन्धस्पर्श भी नहीं है, क्योंकि द्वित्वका त्याग कर एकत्वकी प्राप्तिका नाम बन्ध है। परन्तु एकत्वके रहते हुए स्पर्श नहीं पाया जाता, क्योंकि, एकत्वमें स्पर्शके माननेमें विरोध आता है। यदि कहा जाय कि इस तरह तो सर्वस्पर्शके साथ व्यभिचार हो जायेगा, सो भी बात नहीं है, क्योंकि वहाँपर एकत्वकी प्राप्तिके बिना सब अवयवोंद्वारा स्पर्श स्वीकार किया गया है।

इसी प्रकार भव्यस्पर्श भी नहीं है, क्योंकि जब स्पर्श पर्याय ही उत्पन्न नहीं हुई तब उसका वर्तमानकालमें सद्‌भाव माननेमें विरोध आता है। और यदि स्पर्श पर्याय उत्पन्न हो भी गयी तो उसका शेष स्पर्शोंमें अन्तर्भाव देखा जाता है। दूसरे, वर्तमान कालके सिवाय शेष कालोंका अस्तित्व भी नहीं पाया जाता; इसलिए भी भव्यस्पर्श नहीं बनता।

इसी प्रकार स्थापनास्पर्श भी नहीं है, क्योंकि 'वह यह है' इस संकल्पके कारण अन्य अन्यस्वरूप नहीं हो सकता और वर्तमान कालके साथ स्थापना-निक्षेपका विरोध भी है।

विशेषार्थ -- यहाँ युक्तिपूर्वक यह बतलाया गया है कि ऋजुसूत्र नय एकक्षेत्रस्पर्श, अनन्तरक्षेत्रस्पर्श, बन्धस्पर्श, भव्यस्पर्श और स्थापनास्पर्शको क्यों नहीं स्वीकार करता। सार यह है कि ऋजुसूत्रका विषय न तो द्वित्व है और न अतीत-अनागत काल है, किन्तु इन

सद्दणओ पुण णामफासमिच्छदि, फाससद्देण विणा भावफासपरूवणाए उवायाभावादो। फासफासं पि इच्छदि, दव्वेण विणा कक्खडादिगुणाणं अण्णेहि गुणेहि सह संबंधदंसणादो। भावफासं पि इच्छदि, णाणेण परिछिज्जमाणकक्खडादिगुणाणमुवलंभादो। अवसेसफासे ण इच्छदि, सगविसए तेसिमभावादो। एवं फासणयविभासणदा समत्ता।

संपहिणामफासनिक्खेव (*अ प्रतौ 'संपहि फासणिक्खेव', ता प्रतौ 'संपहि (णाम)फासणिक्खेव' इति पाठः।) परूवणट्ठं उत्तरसुत्तमागदं -

जो सो णामफासो णाम सो जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाणं वा अजीवाणं वा जीवस्स च अजीवस्स च जीवस्स च अजीवाणं च जीवाणं च अजीवस्स च जीवाणं च अजीवाणं च जस्स णाम कीरदि फासे त्ति सो सव्वो णामफासो णाम।।९।।

णामस्स आहारभूदा जीवाजीवाणं एगाणेगसंजोगजणिदा अट्ठ चेव भंगा होंति; अण्णेसिमणुवलंभादो। एदेसु अट्ठसु जस्स णामं कीरदि फासे त्ति सो सव्वो फाससद्दो

एकक्षेत्रस्पर्श आदिकी सिद्धिके लिए कहीं तो द्वित्व और कहीं अतीत-अनागत कालको स्वीकार करना पड़ता है, तभी इनका सद्भाव बनता है। यही कारण है कि यहाँ पर ऋजुसूत्र नयके विषयरूपसे इन पाँचोंको अस्वीकार किया गया है। यद्यपि गाथासूत्रमें स्थापनास्पर्शका ऋजुसूत्र नयके अविषयरूपसे निर्देश नहीं किया है, किन्तु स्थापनानिक्षेप ऋजुसूत्र नयका विषय न होनेसे स्थापनास्पर्शको ऋजुसूत्र नय नहीं स्वीकार करता, यह अपने आप फलित हो जाता है।

परन्तु शब्दनय तो नामस्पर्शको स्वीकार करता है, क्योंकि स्पर्शशब्दके विना भावस्पर्शके कथन करनेका अन्य कोई उपाय नहीं है। वह स्पर्शस्पर्शको भी स्वीकार करता है, क्योंकि द्रव्यके बिना कर्कश आदि गुणोंका अन्य गुणोंके साथ सम्बन्ध देखा जाता है। भावस्पर्शको भी वह स्वीकार करता है, क्योंकि ज्ञानके जिन कर्कश आदि गुणोंको हम जानते हैं उनका वर्तमानकालमें सद्भाव पाया जाता है।

विशेषार्थ -- शब्दनय नामनिक्षेप, द्रव्यनिक्षेप और भावनिक्षेपको विषय करता है, इसीसे यहाँ उक्त तीन स्पर्श शब्दनयके विषयरूपसे निर्दिष्ट किये गये हैं।

शब्दनय शेष स्पर्शोंको स्वीकार नहीं करता, क्योंकि अपने विषयमें उन स्पर्शोंका अभाव है।

इस प्रकार स्पर्शनयविभाषणताका कथन समाप्त हुआ।

अब नामस्पर्शनिक्षेपका कथन करनेके लिए आगेका सूत्र आया है --

जो वह नामस्पर्श है वह एक जीव, एक अजीव, नाना जीव, नाना अजीव, एक जीव और एक अजीव, एक जीव और नाना अजीव, नाना जीव और एक अजीव, नाना जीव और नाना अजीव, इनमेंसे जिसका स्पर्श ऐसा नाम किया जाता है वह सब नामस्पर्श है।।९।।

नामके आधारभूत, जीव और अजीवके एक और अनेकके संयोगसे आठ ही भंग उत्पन्न होते हैं, अन्य भंग नहीं होते। इन आठोंमें जिसका स्पर्श ऐसा नाम रखा जाता है वह सब

णामफासो णाम। कधमेक्कम्हि कम्म-कत्तारभावो जुज्जदे? ण, सुज्जेंदु-खज्जोअ-जलण-मणिणक्खत्तादिसु उभयभावुवलंभादो। एवं णामफासपरूवणा गदा।

जो सो ठवणफासो णाम सो कट्ठकम्मेसु वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लेणकम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा भेंडकम्मेसु वा अक्खो वा वराडओ वा जे चामण्णे एवमादिया ठवणाए ठविज्जदि (* ष. खं. पु. ९, पृ. २४८) फासे त्ति सो सव्वो ठवणफासो णाम।।१०।।

कट्ठेसु जाओ पडिमाओ घडिदाओ दुवय-चउप्पय-अपाद-पादसंकुलाणं ताओ कट्ठकम्माणि णाम। एदाओ चेव चउव्विहाओ पडिमाओ कुड्ड-पड-त्थंभादिसु रायवट्टादि-वण्णविसेसेहि चित्तियाओ चित्तकम्माणि णाम। हय-हत्थि-णर-णारि-वय-वग्घादिपडिमाओ वत्थ(* अ-ता प्रत्योः 'वुत्थु' इति पाठः।)विसेसेसु उद्दाओ पोत्तकम्माणि णाम। मट्टिया-खड(* ता प्रतौ 'ख (क) ड' इति पाठः।)-सक्करादिलेवेण

स्पर्शशब्द नामस्पर्श कहलाता है।

शंका -- एक ही स्पर्श शब्दमें कर्मत्व व कर्तृत्व दोनों कैसे बन सकते हैं?

समाधान -- नहीं, क्योंकि लोकमें सूर्य, चंद्र, खद्योत, अग्नि, मणि और नक्षत्र आदि ऐसे अनेक पदार्थ हैं जिनमें उभयभाव देखा जाता है। उसी प्रकार प्रकृतमें जानना चाहिए।

विशेषार्थ -- यहाँ स्पर्श शब्दको अन्य पदार्थका वाचक न मानकर वही उसका वाच्य और वही उसका वाचक माना गया है। इसीपर यह शंका की गयी है कि एक ही शब्द एक साथ कर्ता और कर्म दोनों कैसे हो सकता है? इसका जो समाधान किया गया है उसका भाव यह है कि जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र आदि प्रकाशमान एक एक पदार्थमें युगपत् प्रकाश्य-प्रकाशकभाव देखा जाता है उसी प्रकार यहाँ एक स्पर्श शब्दको युगपत् कर्ता और कर्म माननेमें कोई बाधा नहीं आती।

इस प्रकार नामस्पर्श प्ररूपणा समाप्त हुई।

जो वह स्थापनास्पर्श है वह काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पोतकर्म, लेप्यकर्म, लयणकर्म, शैलकर्म, गृहकर्म, भित्तिकर्म, दन्तकर्म और भेंडकर्म इनमें; तथा अक्ष और वराटक एवं इनको लेकर इसी प्रकार और भी जो एकत्वके संकल्पद्वारा स्थापना अर्थात् बुद्धिमें स्पर्शरूपसे स्थापित किये जाते हैं वह सब स्थापनास्पर्श है।।१०।।

दो पैर, चार पैर, विना पैर और बहुत पैरवाले प्राणियोंकी काष्ठमें जो प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं उन्हें काष्ठकर्म कहते हैं। जब ये ही चार प्रकारकी प्रतिमाएँ भित्ति, वस्त्र और स्तम्भ आदि पर रागवर्त आदि वर्णविशेषोंके द्वारा चित्रित की जाती हैं तब उन्हें चित्रकर्म कहते हैं। घोड़ा, हाथी, मनुष्य, स्त्री, वृक और वाघ आदिकी वस्त्रविशेषमें उकीरी गयी प्रतिमाओंको पोतकर्म कहते हैं।

घडिदाओ पडिमाओ लेप्पकम्माणि णाम। सिलामयपव्वदेहिंतो अभेदेण घडिदपडिमाओ लेणकम्माणि णाम। पुधभूदसिलासु घडिदपडिमाओ सेलकम्माणि णाम। गोपुराणं सिहरेहिंतो अभेदेण इट्ठ-पत्थरादीहि चिदपडिमाओ गिहकम्माणि णाम। कुड्डेहिंतो अभेदेण कदएहि (* ता प्रतौ 'कद(ड)एहि' इति पाठः।) णिप्पाडियपडिमाओ भित्तिकम्माणि णाम।

हत्थिदंतुक्किण्णपडिमाओ दंतकम्माणि णाम। भेंडमोएण घडिदपडिमाओ भेंडकम्माणि णाम। आदिसद्देण कंस-तंब-रुप्प-सुवण्णादीहि सेक्कारेहि भरिदपडिमाओ वि घेत्तव्वाओ। एवं सब्भावठवणाए आधारपरूवणा कदा(* ता प्रतौ 'गदा' इति पाठः।)। जुअट्ठवणे जयपराजयणिमित्तकवड्डुओ खुल्लो पासओ वा अक्खो णाम। जो अण्णो कवड्डुओ सो वराडओ णाम। एवमेदेहि दोहि वि पदेहि असब्भावट्ठवणविसओ दरिसिदो होदि। पुव्विल्लेहि च पदेहि सब्भावट्ठवणविसओ णिदरिसिदो। 'जे च अमी अण्णे एवमादिया' एदस्स वयणस्स उभयत्थ वि संबंधो कायव्वो अवुत्तसंगहट्ठं। ठवणा त्ति वुत्ते मदिविसेसधारणाणाणं घेत्तव्वं। एदेसु पुव्वुत्तेसु सब्भावासब्भावभेएण दुब्भावमावण्णेसु ट्ठवणाए बुद्धीए अमा एयत्तेण जं ठविज्जदि फासे त्ति सो सव्वो ठवणफासो णाम।

मिट्टी, खड़िया और बालू आदिके लेपसे जो प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं उन्हें लेप्यकर्म कहते हैं। शिलास्वरूप पर्वतोंसे अभिन्न जो प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं उन्हें लयनकर्म कहते हैं। पृथक् पड़ी हुई शिलाओंमें जो प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं उन्हें शैलकर्म कहते हैं। गोपुरोंके शिखरोंसे अभिन्न ईंट और पत्थर आदिके द्वारा जो प्रतिमाएँ चिनी जाती हैं उन्हें गृहकर्म कहते हैं। भित्तिसे अभिन्न तृणोंसे जो प्रतिमाएँ बनायी जाती हैं उन्हें भित्तिकर्म कहते हैं। हाथीके दाँतमें जो प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की जाती हैं उन्हें दन्तकर्म कहते हैं। तथा भेंड अर्थात् .... से घड़ी गयी प्रतिमाओंको भेंडकर्म कहते हैं। आदि शब्दसे काँसा, ताँबा, चांदी और सुवर्ण आदि द्वारा साँचेमें ढाली गयी प्रतिमाएँ भी ग्रहण करनी चाहिए। इस प्रकार सद्भावस्थापनाके आधारका कथन किया। द्यूतकर्मकी स्थापनामें जो जय-पराजयकी निमित्त छोटी कौड़ियाँ और पाँसे होते हैं उन्हें अक्ष कहते हैं और इनके अतिरिक्त कौड़ियोंको वराटक कहते हैं। इस प्रकार इन दोनों पदोंके द्वारा असद्भावस्थापनाका विषय दिखलाया है और पूर्वोक्त पदोंके द्वारा सद्भावस्थापनाका विषय दिखलाया है। सूत्रमें 'जे च अमी अण्णे एवमादिया' यह जो वचन आया है सो अनुक्तका संग्रह करनेके लिए उसका उभयत्र ही सम्बन्ध करना चाहिए। 'स्थापना' ऐसा कहनेपर उससे मतिविशेषरूप धारणाज्ञान ग्रहण करना चाहिए। इन पूर्वोक्त सद्भाव और असद्भावके भेदसे दो

प्रकारके पदार्थोंमें स्थापना अर्थात् बुद्धिसे अमा अर्थात् अभेदरूपसे जो स्पर्श ऐसी स्थापना होती है वह सब स्थापनास्पर्श है।

शंका -- यहाँ स्पृश्य-स्पर्शक भाव कैसे हो सकता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि बुद्धिसे एकत्वको प्राप्त हुए उनमें स्पृश्य-स्पर्शक भावके होनेमें कोई

कधमत्र स्पृश्य-स्पर्शकभावः? ण, बुद्धीए एयत्तमावण्णेसु तदविरोहादो सत्त-पमेयत्तादीहि सव्वस्स सव्वविसयफोसणुवलंभादो वा।

जो सो दव्वफासो णाम।।११।।

एवं पुव्वपइज्जासंभालणवयणं। एदस्स अत्थो वुच्चदे त्ति वा जाणावणट्ठमेदं वुच्चदे ।

जं दव्वं दव्वेण पुसदि सो सव्वो दव्वफासो णाम।।१२।।

तं जहा -- परमाणुपोग्गलो सेसपोग्गलदव्वेण फुसदि; पोग्गलदव्वभावेण परमाणुपोग्गलस्स सेसपोग्गलेहि सह एयत्तुवलंभादो। एयपोग्गलदव्वस्स सेसपोग्गलदव्वेहि संजोगो समवाओ वा दव्वफासो णाम। अधवा जीवदव्वस्स पोग्गलदव्वस्स य जो एयत्तेण संबंधो सो दव्वफासो णाम। जीव-पोग्गलदव्वाणममुत्तमुत्ताणं कधमेयत्तेण संबंधो? ण एस दोसो, संसारावत्थाए जीवाणममुत्तताभावादो। जदि संसारावत्थाए मुत्तो जीवो,

----

विरोध नहीं आता, अथवा सत्त्व और प्रमेयत्व आदिकी अपेक्षा सबका सर्वविषयक स्पर्शन पाया जाता है।

विशेषार्थ -- स्थापनाके दो भेद हैं -- सद्भावस्थापना और असद्भावस्थापना। तदाकार स्थापनाको सद्भावस्थापना कहते हैं और अतदाकार स्थापनाको असद्भावस्थापना कहते हैं। जिनमें स्थापना की जाती है वे पदार्थ जुदे होते हैं और जिनकी स्थापना की जाती है वे पदार्थ जुदे होते हैं। प्रकृतमें स्पर्शका विचार चला गया है, इसलिए प्रश्न है कि स्पर्शसे भिन्न पदार्थोंमें स्पर्श शब्दका व्यवहार कैसे किया जायेगा? समाधान यह है कि बुद्धिसे अन्य पदार्थमें स्पर्शका

आरोप कल लिया जाता है जिससे 'यह स्पर्श है' ऐसा व्यवहार बन जाता है। प्रकृतमें इसी दृष्टिसे स्पर्शस्थापनाके दो भेद और उनके विविध उदाहरण उपस्थित किये गये हैं।

अब द्रव्यस्पर्शका अधिकार है।।११।।

यह वचन पूर्व प्रतिज्ञाकी सम्हाल करता है। अथवा आगे 'इसका अर्थ कहते हैं' यह जतलानेके लिए यह वचन कहा है।

जो एक द्रव्य दूसरे द्रव्यसे स्पर्शको प्राप्त होता है वह सब द्रव्यस्पर्श है।।१२।।

यथा -- परमाणु पुद्गल शेष पुद्गल द्रव्यके साथ स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि, पुद्गल द्रव्यरूपसे परमाणु पुद्गलका शेष पुद्गलोंके साथ एकत्व पाया जाता है। एक पुद्गल द्रव्यका शेष पुद्गल द्रव्योंके साथ जो संयोग या समवाय सम्बन्ध होता है वह द्रव्यस्पर्श कहलाता है। अथवा जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्यका जो एकमेक सम्बन्ध होता है वह द्रव्यस्पर्श कहलाता है।

शंका -- जीव द्रव्य अमूर्त है और पुद्गल द्रव्य मूर्त है। इनका एकमेक सम्बन्ध कैसे हो सकता है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि संसार अवस्थामें जीवोंमें अमूर्तपना नहीं पाया जाता।

शंका -- यदि संसार अवस्थामें जीव मूर्त है तो मुक्त होनेपर वह अमूर्तपनेको कैसे प्राप्त हो सकता है?

कधं णिव्वुत्तो संतो अमुत्ततमल्लियइ? ण एस दोसो, जीवस्स मुत्तत्तणिबंधणकम्माभावे तज्जणिदमुत्तत्तस्स वि तत्थ अभावेण सिद्धाणममुत्तभावसिद्धीदो? जीवपोग्गलाणं कधमादिबंधो? ण, पवाहसरूवेण अणादिबंधबद्धाणं आदीए अभावादो। ण च कम्मवत्तिबंधं पडि अणादित्तमत्थि, कम्मविणासाभावेण जीवस्स मरणाभावप्पसंगादो उवजीविदोसहाणं वाहिविणासाभावप्पसंगादो च। ण च पोग्गलाणं जीव-पोग्गलेहि चेव फासो किंतु आगासादिदव्वेहिं पि फासो अत्थि; णेगमणएण पच्चासत्तिदंसणादो (* ता प्रतौ 'णेगमणयपच्चासत्तिदंसणादो' इति पाठः।) कधं दव्वस्स

फाससण्णा? ण, स्पृश्यते अनेन स्पृशतीति (* ता प्रतौ 'स्पृश्यतीति' इति पाठः) वा स्पर्श-शब्दसिद्धेर्द्रव्यस्य स्पर्शत्वोपपत्तेः। सत्त-पमेयत्तादिणा सरिसाणं दव्वाणं छण्णं पि दव्वफासो णइगमणयमस्सिदूण अत्थि त्ति एगादिसंजोगेहि भंगपमाणुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। तं जहा -- जीवदव्वं जीवदव्वेण पुस्सिज्जदि, अणंताणं णिगोदाणमेगणिगोदसरीरे समवेदमवट्ठाणाणुवलंभादो जीवभावेण एयत्तदंसणादो वा।१। पोग्गलदव्वं पोग्गलदवेवेण पुस्सिज्जदि, अणंताणं पोग्गलदव्वपरमाणूणं समवेदाणमुवलंभादो पोग्गलभावेण एयत्तदंसणादो वा।२। धम्मदव्वं धम्म-

----

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जीवमें मूर्तत्वका कारण कर्म है, अतः कर्मका अभाव हो जानेपर तज्जनित मूर्तत्वका भी अभाव हो जाता और इसलिए सिद्ध जीवोंके अमूर्तपनेकी सिद्धि हो जाती है।

शंका -- जीव और पुद्‌गलोंका आदि बन्ध कैसे है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, प्रवाहरूपसे जीव और पुद्‌गल अनादि बन्धनबद्ध है, अतः उसका आदि नहीं बनता। पर इसका अर्थ यह नहीं कि कर्मव्यक्तिरूप बन्धकी अपेक्षा वह अनादि है, क्योंकि, ऐसा माननेपर कर्मका कभी नाश नहीं होनेसे जीवके मरणके अभावका प्रसंग आता है और उपजीवी औषधियोंके निमित्तसे व्याधिविनाशके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है।

पुद्‌गलोंका जीव और पुद्‌गलोंके साथ ही स्पर्श नहीं पाया जाता, किन्तु आकाश आदि द्रव्योंके साथ भी उनका स्पर्श पाया जाता है, क्योंकि नैगम नयकी अपेक्षा इनकी प्रत्यासत्ति देखी जाती है।

शंका -- द्रव्यकी स्पर्श संज्ञा कैसे है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि 'जिसके द्वारा स्पर्श किया जाता है या जो स्पर्श करता है' इस व्युत्पत्तिके अनुसार स्पर्श शब्दकी सिद्धि होनेसे द्रव्यकी स्पर्श संज्ञा बन जाती है।

सत्त्व और प्रमेयत्व आदिकी अपेक्षा सदृष ऐसे छहों द्रव्योंके भी द्रव्यस्पर्श नैगम नयकी अपेक्षा पाया जाता है, इसलिए एक आदि संयोगोंकी अपेक्षा जितने भंग उत्पन्न होते हैं उन्हें बतलाते हैं। यथा -- एक जीव दूसरे जीव द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि, एक निगोदशरीरमें समवेत अनन्त निगोद जीवोंका अवस्थान पाया जाता है। अथवा जीवरूपसे उन

सबमें एकत्व देखा जाता है। १। एक पुद्‌गल द्रव्य दूसरे पुद्‌गल द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि, समवेत अनन्त पुद्‌गल परमाणु पाये जाते हैं, अथवा पुद्‌गल रूपसे

दव्वेण पुस्सिज्जदि असंगहियणेगमणयमस्सिदूण लोगागासपदेसमेत्तधम्मदव्वपदेसाणं पुध पुध लद्धदव्ववएसाणमण्णोण्णं पासुवलंभादो। ३। अधम्मदव्वमधम्मदव्वेण पुसिज्जदि, तक्खंध-देस-पदेस-परमाणूणमसंगहियणेगमणएण पत्तदव्वभावाणमेयत्तदंसणादो। ४। कालदव्वं कालदव्वेण पुसिज्जदि लोगागासपदेसमेत्तकालपरमाणूणं एगक्खेत्तठइद(* अ-ता प्रत्योः 'एगक्खेत्तं रइद' इति पाठः।)मुत्ताहलाणं च समवायवज्जियाणं कालभावेण एयत्तुवलंभादो एकलोगागासावट्ठाणेण एयत्तदंसणादो वा। ५। आगासदव्वमागासदव्वेण पुसिज्जदि, आगासक्खंध-देस-पदेस-परमाणूणं णेगमणएण पुध पुध लद्धदव्वभावाणं अण्णोण्णफासुवलंभादो। ६। एत्थुवउज्जंतीओ गाहाओ इ

लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का।
रयणाणं रासी इव ते कालाणू मुणेयव्वा*।।२।।
(* गो. जी. ५८८)

खंधं सयलसमत्थं तस्स दु अद्धं भणंति देसो त्ति।
अद्धंद्धं च पदेसो अविभागी जो स परमाणू *।।३।।
*पंचा. ७५, मूला. १३१, ति. प. १-९५, गो. जी. ६०३

संपहि दुसंजोगेण दव्वभंगुप्पत्ती कीरदे। तं जहा -- जीवदव्वेण पोग्गलदव्वं पुसिज्जदि, जीवदव्वस्स अणंताणंतकम्म-णोकम्मपोग्गलक्खंधेहि एयत्तदंसणादो ।७। जीव-धम्मद-

----

उनमें एकत्व देखा जाता है। २। धर्म द्रव्य धर्म द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि असंग्रहित नैगम नयकी अपेक्षा लोकाकाशके प्रदेश प्रमाण और पृथक् पृथक् द्रव्य संज्ञाको प्राप्त हुए धर्म द्रव्यके प्रदेशोंका परस्परमें स्पर्श देखा जाता है। ३। अधर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि, असंग्रहिक नैगमनयकी अपेक्षा द्रव्यभावको प्राप्त हुए अधर्म द्रव्यके स्कन्ध, देश, प्रदेश और परमाणुओंका एकत्व देखा जाता है। ४। काल द्रव्य काल द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त होता है, क्योंकि, एक क्षेत्रमें स्थापित मुक्ताफलोंके समान समवायसे रहित

लोकाकाशके प्रदेशप्रमाण कालपरमाणुओंका कालरूपसे एकत्व देखा जाता है, अथवा एक लोकाकाशमें अवस्थान होनेसे उनमें एकत्व देखा जाता है। ५। आकाश द्रव्य आकाश द्रव्यके द्वारा स्पर्शको प्राप्त हो रहा है, क्योंकि, नैगम नयकी अपेक्षा पृथक् पृथक् द्रव्यभावको प्राप्त हुए आकाशके स्कन्ध, देश, प्रदेश और परमाणुओंका परस्पर स्पर्श देखा जाता है। ६। प्रकृतमें उपयुक्त गाथाएँ -

लोकाकाशके एक एक प्रदेशपर रत्नोंकी राशिके समान जो एक एक स्थित हैं वे कालाणु हैं, ऐसा जानना चाहिए।।२।।

जो सर्वांशमें समर्थ हैं उसे स्कन्ध कहते हैं। उसके आधेको देश और आधेके आधेको प्रदेश कहते हैं। तथा जो अविभागी है उसे परमाणु कहते हैं।।३।।

अब द्विसंयोगकी अपेक्षा द्रव्यके भंगोंकी उत्पत्तिका कथन करते हैं। यथा -- जीव द्रव्यके द्वारा पुद्गल द्रव्य स्पर्श किया जाता है, क्योंकि जीव द्रव्यका अनन्तानन्त कर्म व नोकर्मरूप पुद्गलस्कन्धोंके साथ एकत्व देखा जाता है। ७। जीव द्रव्य और धर्म द्रव्यका परस्परमें स्पर्श है, क्योंकि,

----

व्वाणमत्थि फासो, सत्त-पमेयत्तादीहि लोगमेत्तखेत्तावट्ठाणेण एयत्तदंसणादो। ८। जीव-अधम्मदव्वाणमत्थि फासो। कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। ९। जीव-कालदव्वाणमत्थिफासो। कारणं सुगमं। १०। जीवागासदव्वाणमत्थि फासो। कारणं सुगमं। ११। पोग्गल-धम्मदव्वाणमत्थि फासो। १२। पोग्गल-अधम्मदव्वाणमत्थि फासो।१३। पोग्गल-कालदव्वाणमत्थि फासो। १४। पोग्गल-आगासदव्वाणमत्थि फासो । १५। धम्माधम्मदव्वाणमत्थि फासो । १६। धम्म-कालदव्वाणमत्थि फासो । १७। धम्मागासदव्वाणमत्थि फासो ।१८। अधम्मागासाणमत्थि फासो। १९। कालागासाणमत्थि फासो।२१। जीव-पोग्गलदव्वाणमत्थि फासो । २२। जीव-पोग्गल-अधम्मदव्वाणमत्थि फासो । २३। जीवपोग्गलकालदव्वाणमत्थि फासो । २४। जीवपोग्गलागासदव्वाणमत्थि फासो । २५। जीवधम्माधम्मदव्वाणमत्थि फासो । २६। जीवधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो । २८। जीवअधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो । २९। जीवअधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो । ३०। जीवकालागासदव्वाणमत्थि फासो । ३१।

पोग्गलधम्माधम्मदव्वाणमत्थि फासो । ३२। पोग्गलधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो । ३३। पोग्गलधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो । ३४। पोग्गलअधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो । ३५। पोग्गलअधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो । ३६। पोग्गलकालागासदव्वाणमत्थि फासो । ३७। धम्माधम्मकालदव्वाणमत्थि

सत्त्व व प्रमेयत्व आदि धर्मोकी अपेक्षा और लोकमात्र क्षेत्रके अवस्थानकी अपेक्षा इनका एकत्व देखा जाता है। ८। जीव और अधर्म द्रव्यका परस्परमें स्पर्श है। कारण पहलेके समान कहना चाहिए। ९। जीव और काल द्रव्यका स्पर्श है। कारण सुगम है। १०। जीव और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। कारण सुगम है। ११। पुद्‌गल और धर्म द्रव्यका स्पर्श है। १२। पुद्‌गल और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। १३। पुद्‌गल और काल द्रव्यका स्पर्श है। १४। पुद्‌गल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। १५। धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। १६। धर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। १७। धर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। १८। धर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। १९। अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। २०। काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। २१। जीव, पुद्‌गल और धर्म द्रव्यका स्पर्श है। २२। जीव, पुद्‌गल और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। २३। जीव, पुद्‌गल और काल द्रव्यका स्पर्श है। २४। जीव, धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। २५। जीव, धर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। २७। जीव, धर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। २८। जीव, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। २९। जीव, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ३०। पुद्‌गल, धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। ३१। पुद्‌गल, धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। ३२। पुद्‌गल, धर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। ३३। पुद्‌गल, धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है। ३४ । पुद्‌गल, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। ३५। पुद्‌गल, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ३६। पुद्‌गल, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ३७। धर्म, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है। ३८।

फासो । ३८। धम्माधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो । ३९। धम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो । ४०। अधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो । ४१। जीव-पोग्गल-धम्माधम्मदव्वाणमत्थि फासो । ४२।

जीवपोग्गलधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो ।४३। जीवपोग्गलधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो ।४४। जीवपोग्गलअधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो ।४५। जीवपोग्गलधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो ।४६। जीवपोग्गलकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।४७। जीवधम्माधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो ।४८। जीवधम्माधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो ।४९। जीवधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५०। जीवअधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५१। पोग्गलधम्माधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो ।५२। पोग्गलधम्माधम्मागासदव्वाणमत्थि फासो ।५३। पोग्गलधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५४। पोग्गलअधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५५। धम्माधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५६। जीवपोग्गलधम्माधम्मकालदव्वाणमत्थि फासो ।५७। जीवपोग्गलधम्माधम्मआगासदव्वाणमत्थि फासो ।५८। जीव-पोग्गल-धम्म-कालागासदव्वाणमत्थि फासो ।५९। जीवपोग्गलअधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।६०। जीवधम्माधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।६१। पोग्गलधम्माधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।६२। जीवपोग्गलधम्माधम्मकालागासदव्वाणमत्थि फासो ।६३। एवं तेसट्ठिदव्वफासवियप्पा सकारणा वत्तव्वा। एत्थुवउज्जंती गाहा -

----

धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।३९। धर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४०। अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४१। जीव, पुद्गल, धर्म और अधर्म द्रव्यका स्पर्श है।४२। जीव, पुद्गल, धर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है।४३। जीव, पुद्गल, धर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४४। जीव, पुद्गल, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है।४५। जीव, पुद्गल, धर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४६। जीव, पुद्गल, धर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४७। जीव, धर्म, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है।४८। जीव, धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।४९। जीव, धर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५०। जीव, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५१। पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है।५२। पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५३। पुद्गल, धर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५४। पुद्गल, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५५। धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है।५६। जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और काल द्रव्यका स्पर्श है।५७। जीव,

पुद्‌गल, धर्म, अधर्म और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ५८। जीव, पुद्‌गल, धर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ५९। जीव, पुद्‌गल, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ६०। जीव, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ६१। पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ६२। जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, काल और आकाश द्रव्यका स्पर्श है। ६३। इस प्रकार द्रव्य-स्पर्शके त्रेसठ विकल्प सकारण कहने चाहिए। यहाँ उपयोगी पड़नेवाली गाथा --

----

सत्ता सव्वपयत्था सविस्सरूवा अणंतपज्जाया।

भंगुप्पायधुवत्ता सप्पडिवक्खा हवइ एक्का*।।४।।

(*पंचा. ८, ष. खं. ९, पृ. १७१)

एवं दव्वफासपरूवणा गदा।

जो सो एयक्खेत्तफासो णाम।।१३।।

तस्स अत्थपरूवणा कीरदि त्ति भणिदं होदि।

जं दव्वमेयक्खेत्तेण पुसदि सो सव्वो एयक्खेत्तफासो णाम।।१४।।

एक्कम्हि आगासपदेसे ट्ठिदअणंताणंतपोग्गलक्खंधाणं समवाएण संजोएण वा जो फासो सो एयक्खेत्तफासो णाम। बहुआणं दव्वाणं अक्कमेण एयक्खेत्तपुसणदुवारेण वा एयक्खेत्तफासो वत्तव्वो।

सत्ता सब पदार्थोंमें स्थित है, सविश्वरूप है, अनन्त पर्यायवाली है, नाश, उत्पाद और ध्रौव्यस्वरूप है, तथा सप्रतिपक्ष होकर भी एक है।

विशेषार्थ -- यहाँ द्रव्योंके स्पर्शके भेद और उनके कारणोंकी विस्तृत चर्चा की गयी है। सब द्रव्योंके दो प्रकारका सम्बन्ध दिखलायी देता है -- एक अनादि सम्बन्ध और दूसरा सादि सम्बन्ध। धर्म आदि चार द्रव्योंके साथ जीव और पुद्‌गलका तथा उनका परस्परमें अनादि सम्बन्ध है। तथा जीव-जीवका, जीव-पुद्‌गलका और पुद्‌गल-पुद्‌गलका दोनों प्रकारका सम्बन्ध देखा जाता है। प्रकृतमें स्पर्श शब्दकी व्याख्या है -- जिसके द्वारा स्पर्श किया जाता है या जो स्पर्श

करता है। इस व्याख्यानके अनुसार सभी द्रव्योंका परस्परमें स्पर्शभाव बन जाता है। बन्धविशेषकी अपेक्षा जीव जीवके साथ, जीव पुद्‌गलके साथ और पुद्‌गल पुद्‌गलके साथ परस्पर संश्लेषको प्राप्त होते रहते हैं, इसलिए इनका तो स्पर्श है ही, किन्तु सत्त्व, प्रमेयत्व आदि धर्मोंकी अपेक्षा इनका अन्य द्रव्योंके साथ और अन्य द्रव्योंका परस्परमें स्पर्श बन जाता है। नयविशेषकी दृष्टिसे यह योजना की गयी है जिसका खुलासा मूलमें किया ही है। इस प्रकार छह द्रव्योंके स्वसंयोगी, द्विसंयोगी आदिकी अपेक्षा कुल भंग ६३ होते हैं। स्वसंयोगी ६, द्विसंयोगी १५, त्रिसंयोगी २०, चतुःसंयोगी १५, पंचसंयोगी ६ और षट्‌संयोगी १; कुल ६३ भंग होते हैं। इनका स्पष्टीकरण मूलमें किया ही है।

इस प्रकार द्रव्यस्पर्शका कथन समाप्त हुआ।

अब एकक्षेत्रस्पर्शका अधिकार है।।१३।।

इसकी अर्थप्ररूपणा करते हैं, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

जो द्रव्य एक क्षेत्रके साथ स्पर्श करता है वह सब एकक्षेत्रस्पर्श है।।१४।।

एक आकाशप्रदेशमें स्थित अनन्तानन्त पुद्‌गल स्कन्धोंका समवाय सम्बन्ध या संयोग द्वारा जो स्पर्श होता है वह एकक्षेत्रस्पर्श कहलाता है। अथवा बहुत द्रव्योंका युगपत् एकक्षेत्रके स्पर्शनद्वारा एकक्षेत्रस्पर्श कहना चाहिए।

जो सो अणंतरक्खेत्तफासो णाम।।१५।।

तस्स पुव्वुद्दिट्ठस्स अत्थो वुच्चदे --

जं दव्वमणंतरक्खेत्तेण पुसदि सो सव्वो अणंतरक्खेत्तफासो णाम।।१६।।

किमणंतरक्खेत्तं णाम? एगागासपदेसक्खेत्तं पेक्खिऊण अणेगागासपदेसक्खेत्तमणंतरं होदि, एगाणेगसंखाणमंतरे अण्णसंखाभावादो। दुपदेसट्ठिददव्वाणमण्णेहि दोआगासपदेसट्ठिददव्वेहि जो फासो सो अणंतरक्खेत्तफासो णाम। दुपदेसट्ठियखंधाणं तिपदेसट्ठियखंधाणं च जो फासो सो वि अणंतरक्खेत्तफासो। एवं चदु-पंचादिपदेसट्ठियखंधेहि दुसंजोगपरूवणाए बिदियक्खो संचारेदव्वो जाव देसूणलोयट्ठियमहक्खंधे त्ति। एदेण कमेण सव्वे दुसंजोगभंगे जहासंभवे परूविय तिसंजोगादिभंगा वि परूवेदव्वा। अधवा पुव्विल्लसुत्तट्ठियएकसद्दो संखाए वट्टमाणो त्ति ण वत्तव्वो,

किंतु समाणत्थे वट्टदे। एवं संते समाणोगाहणखंधाणं (* ता प्रतौ 'समाणोगाहणा-खंधाणं' इति पाठः।) जो फासो सो एयत्तक्खेत्तफासो णाम। असमाणोगाहणखंधाणं

विशेषार्थ -- यहाँ एकक्षेत्रस्पर्शका विचार किया गया है। एकक्षेत्रस्पर्शमें एक शब्द क्षेत्रका विशेषण है। तदनुसार यह अर्थ फलित होता है कि विवक्षित एक आकाशप्रदेशके साथ अनन्तानन्त पुद्गल स्कन्धोंका या अनेक द्रव्योंका युगपत् जो स्पर्श होता है वह एकक्षेत्रस्पर्श कहलाता है।

अब अनन्तरक्षेत्रस्पर्शका अधिकार है।।१५।।

इस पूर्वोक्त स्पर्शका अर्थ कहते हैं --

जो द्रव्य अनन्तर क्षेत्रके साथ स्पर्श करता है वह सब अनन्तरक्षेत्रस्पर्श है।।१६।।

शंका -- अनन्तर क्षेत्र किसे कहते हैं?

समाधान -- एक आकाशप्रदेशरूप क्षेत्रको देखते हुए अनेक आकाशप्रदेशरूप क्षेत्र अनन्तरक्षेत्र हैं, क्योंकि, एक और अनेक संख्याके मध्यमें अन्य संख्या नहीं उपलब्ध होती।

दो प्रदेशोंमें स्थित द्रव्योंका दो आकाशके प्रदेशोंमें स्थित अन्य द्रव्योंके साथ जो स्पर्श होता है वह अनन्तरक्षेत्रस्पर्श है। दो प्रदेशोंमें स्थित स्कन्धोंका और तीन प्रदेशोंमें स्थित स्कन्धोंका जो स्पर्श होता है वह भी अनन्तरक्षेत्रस्पर्श है। इसी प्रकार चार, पाँच आदि प्रदेशोंमें स्थित स्कन्धोंके साथ दो संयोगका कथन करते समय कुछ कम लोकमें स्थित महास्कन्धके प्राप्त होने तक द्वितीय अक्षका संचार करना चाहिए। इस क्रमसे सभी द्विसंयोगी भंगोंका यथा-सम्भव कथन करके तीनसंयोगी आदि भंगोंका भी कथन करना चाहिए।

अथवा पूर्वोक्त सूत्रमें स्थित जो 'एक' शब्द है वह संख्यावाची है, ऐसा नहीं कहना चाहिए; किन्तु समानार्थवाची है ऐसा कहना चाहिए। इस स्थितिमें समान अवगाहनावाले स्कन्धोंका जो स्पर्श होता है वह एकक्षेत्रस्पर्श है और असमान अवगाहनावाले स्कन्धोंका जो स्पर्श होता है वह अनन्तरक्षेत्रस्पर्श है।

जो फासो सो अणंतरखेत्तफासो णाम। कधमणंतरत्तं? समाणासमाणक्खेत्ताणमंतरे खेत्तंतराभावादो। एवमणंतरखेत्तफासपरूवणा गदा।

जो सो देसफासो णाम।।१७।।

तस्स अत्थपरूवणा कीरदे --

जं दव्वदेसं (* अ प्रतौ 'दव्वं देसं' इति पाठः।) देसेण पुसदि सो सव्वो देसफासो णाम।।१८।।

एगस्स दव्वस्स देसं अवयवं जदि (देसेण) अण्णदव्वदेसेण (* अ प्रतौ 'अण्णदव्वं देसेण' इति पाठः।) अप्पणो अवयवेण पुसदि तो देसफासो त्ति दट्ठव्वो। एसो देसफासो खंधावयवाणं चेव होदि, ण परमाणुपोग्गलाणं, णिरवयवत्तादो त्ति ण पच्चवट्ठेयं, परमाणूणं णिरवयवत्तासिद्धीदो। 'अपदेसं णेव इंदिए गेज्झं' (* ति. प. १ -९६) इदि परमाणूणं णिरवयवत्तं परियम्मे वुत्तमिदि णासंकिज्जं (* ता प्रतौ 'ण संकणिज्जं' इति पाठः।) पदेसो णाम परमाणू, सो जम्हि परमाणुम्हि समवेदभावेण णत्थि सो परमाणू अपदेसओ त्ति परियम्मे वुत्तो। तेण ण णिरवयवत्तं तत्तो गम्मदे। परमाणू सावयवो त्ति कत्तो णव्वदे? खंधभावण्णहाणुववत्तीदो। जदि

शंका -- इसे अनन्तरपना कैसे प्राप्त होता है?

समाधान -- क्योंकि समान और असमान क्षेत्रोंके मध्यमें अन्य क्षेत्र नहीं उपलब्ध होता, इसलिए इसे अनन्तरपना प्राप्त है।

विशेषार्थ -- अनन्तर शब्द सापेक्ष है। पहले एक क्षेत्रका विवेचन कर आये हैं। उसके सिवा शेष सब क्षेत्र अनन्तर कहलाता है और इन क्षेत्रोंमें स्थित स्कन्धका स्पर्श अनन्तरक्षेत्रस्पर्श कहा जाता है। यदि एकका अर्थ समान किया जाता है तो अनन्तरक्षेत्रस्पर्शका अर्थ असमान अवगाहनावाले स्कन्धोंका स्पर्श फलित होता है।

इस प्रकार अनन्तरक्षेत्रप्ररूपणा समाप्त हुई।ॐ

अब देशस्पर्शका अधिकार है।।१७।।

जो द्रव्यका एक देश एक देशके साथ स्पर्श करता है वह सब देशस्पर्श है।।१८।।

एक द्रव्यका देश अर्थात् अवयव यदि अन्य द्रव्यके देश अर्थात् उसके अवयवके साथ स्पर्श करता है तो वह देशस्पर्श जानना चाहिए। यह देशस्पर्श स्कन्धोंके अवयवोंकाही होता है, परमाणुरूप पुद्‌गलोंका नहीं; क्योंकि वे निरवयव होते हैं। यदि कोई ऐसा निश्चय करे तो वह ठीक नहीं है, क्योंकि परमाणु निरवयव होते हैं यह बात असिद्ध है।

'परमाणु अप्रदेशी होता है और उसका इन्द्रियोंद्वारा ग्रहण नहीं होता।' इस प्रकार परमाणुका निरवयवपना परिकर्ममें कहा है। यदि कोई ऐसी आशंका करे तो वह भी ठीक नहीं है, क्योंकि प्रदेशका अर्थ परमाणु है। वह जिस परमाणुमें समवेतभावसे नहीं है वह परमाणु अप्रदेशी है, इस प्रकार परिकर्ममें कहा है। इसलिए परमाणु निरवयव होता है यह बात परिकर्मसे नहीं जानी जाती है।

शंका -- परमाणु सावयव होता है, यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान -- स्कन्धभावको अन्यथा वह प्राप्त नहीं हो सकता, इसीसे जाना जाता है कि परमाणु सावयव होता है।